सम्पादक की कलम से.....

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ जनवरी 2015 का अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

एक संगीतकार को अपने साज से कितनी मुहब्बत होती है, ये बात किसी से छुपी नहीं है। उसका साज उसकी जिंदगी की बेशकीमती दौलत होती है, जिससे जुदा होकर वो रह नहीं सकता। हाल ही में न्यूज चैनलों पर अचानक एक दिन खबर आई कि भारतरत्न बिस्मिल्लाह खान की शहनाई चोरी हो गई। इस खबर से उनके चाहने वालों और उनके संगीत प्रेमियों को धक्का सा लगा। बिस्मिल्लाह खान साहब अपनी शहनाई से बेइन्तिहा मुहब्बत करते थे। अपनी पत्नी के इन्तकाल के बाद से ही अपनी शहनाई को बिस्तर पर रखते थे और उसे ही अपनी पत्नी मानते थे। कहते थे कि इससे उन्हें अपने संगीत के बारे में कुछ नया सोचने और नया करने का जज्बा मिलता है। अपनी जिंदगी के आखिरी पड़ाव पर जब वह अस्पताल में भर्ती थे तो किसी ने उनसे उनका हाल–चाल पूछा और बातों ही बातों में उनकी बेगम (शहनाई) के बारे में भी पूछा। तो बिस्मिल्लाह खान साहब संजीदे होकर बोलें–''वह घर पर हैं, मैं बीमार हूँ इसलिए वह घर संभाल रही है।''

''कहते जिसको है शहनाई, उसका दिल भी रोता है
हर इक साज में दर्द छिपा है, चोट से पैदा होता है''

सन् 2014 जाते–जाते संगीत की एक महान विलक्षण प्रतिभा कथक सम्राज्ञी सितारा देवी को हमसे छीन ले गया। 25 नवम्बर 2014 को सितारा देवी ने जमाने से पर्दा कर लिया।

संगीत नाटक अकादमी तथा पद्मश्री सम्मान से सम्मानित सितारा देवी ने फिल्मों के लिए भी कोरियोग्राफी की थी। उन्हें वर्ष 2011 में लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया था।

सन् 1920 में कलकत्ता में दिवाली के दिन जन्मी सितारा देवी के विषय में सहादत हसन 'मंटों' ने अपनी पुस्तक 'मीना बाजार' में लिखा है कि –"वह स्त्री नहीं तूफान हैं। ऐसा तूफान जो केवल एक बार आकर नहीं टलता, बार–बार आता है, हजारों सफे काले किए जाए तब भी उनकी कहानी नहीं कही जा सकती। सितारा मुझे कभी थकी नहीं दिखाई दी, वो किसी और मिटटी की बनी हैं। दूसरे थक हार जाएंगे मगर वो वैसे की वैसी ही रहेंगी, उसकी बोटी–बोटी, अंग–अंग थिरकता है।"

संगीत गैलेक्सी परिवार उन्हें श्रद्धांजली अर्पित करता है।

धन्यवाद